वाट्सएप एवं फेसबुक का उपयोग धर्म की निंदा के लिये नहीं धर्म को जिंदा करने के लिये करें

• श्रमणाचार्य विमर्शसागर

दुनिया का सारा संचालन विश्वास यानि श्रद्धा के आधार पर चलता है। श्रद्धा को जमने में वर्षों लग जाते हैं, पर श्रद्धा के टूटने में एक समय भी नहीं लगता। इसीलिए दुनिया में सबसे कीमती वस्तु अगर कोई है तो वो हमारी श्रद्धा है। हमें हर हाल में अपनी श्रद्धा को स्थिर रखने का प्रयास करना चाहिये। जैन धर्म के परिप्रेक्ष्य में अगर हम श्रद्धा को परिभाषित करें तो श्रद्धा का अर्थ होता है–सम्यग्दर्शन। सम्यग्दर्शन को धर्म की मूल या जड़ कहा जाता है। सम्यग्दर्शन का अर्थ है सच्चे देव–शास्त्र–गुरु और धर्म पर दृढ़ श्रद्धान करना। दृढ़ श्रद्धानी जीव न तो कभी स्वयं धर्म के मार्ग से विचलित होता है और न कभी दूसरों को धर्म से विचलित करता है। संसार में प्रत्येक जीव कर्मों के द्वारा सताये जा रहे हैं। किसी के तीव्र पाप कर्म के उदय से अगर पवित्र धर्म के मार्ग में कोई अप्रिय घटना घट जाये तो, तो धर्मात्मा जीवों का कर्तव्य होता है कि वो उस अप्रिय घटना को सबसे पहले तो वहीं ढक दें, फिर उस विपरीत आचरण वाले व्यक्ति से एकांत में चर्चा करके पुन: उसे धर्म मार्ग पर स्थिर करें। लेकिन वर्तमान की परिस्थितियाँ कुछ बदलती जा रही हैं। आज न तो किसी को धर्म से मतलब है और न ही धर्मात्मा से, मतलब है तो सिर्फ अपनी अज्ञानता से। ऐसे अज्ञानी जीव जो धर्म की A B C D भी नहीं जानते, वो आज अपने आप को धर्म का ठेकेदार समझते हैं। ये धर्म के क्षेत्र में ऐसे चील और गिद्ध हैं जिन्हें कभी धर्म के क्षेत्र में कोई किंचित अप्रिय घटना मिल जाये तो वे उसे फेसबुक और वाट्सएप के माध्यम से नोचना प्रारंभ कर देते हैं इन मिथ्यादृष्टि धर्म के ढोंगी पापी जीवों को अगर धर्म के क्षेत्र में किसी अप्रिय घटना का पता चल जाये तो ये अज्ञानी तुरंत बिना कुछ सोचे विचारे उस घटना को फेसबुक, यूट्यूब, और वाट्सएप

के माध्यम से जन–जन तक मैसेज फैलाने में लग जाते हैं, इस बात का विचार नहीं करते कि इस घटना के माध्यम से कितने लोगों की धर्म और धर्मात्माओं के प्रति श्रद्धा तार–तार हो जायेगी, न जाने कितने अज्ञानी जीव धर्म की निंदा करने लगेंगे। न जाने कितने लोगों का धर्म के ऊपर से विश्वास उठ जायेगा। धर्म के क्षेत्र में कभी कोई अप्रिय घटना किसी कर्म के सताये जीव द्वारा घट जाये तो उसका फेसबुक, वाट्सएप, यूट्यूब या अन्य किसी साधनों के द्वारा प्रचार–प्रसार करके धर्म के हत्यारों की जमात में अपना नाम दर्ज न करें अपितु धर्म की रक्षा कैसे होगी इसका विचार करें। अगर आप फेसबुक और वाट्सएप चलाते हो तो सच्चे धर्म ग्रंथों को पढ़ो और महान पुरुषों का आदर्श जीवन, महासतियों की आदर्श कथायें जन–जन तक प्रसारित करो, जिससे धर्म का बहुमान बड़े, लोगों की श्रद्धा निर्मल हो। ऐसे मानव के रूप में चील और गिद्धों से सावधान रहें जो मात्र मृत देह को नोचने का काम करते हैं। जो धर्म से गिर चुका है वो तो धर्म के क्षेत्र में मृत ही है अब उसे नोंचने से क्या लाभ होगा ? सिर्फ हानी होगी, धर्म की और धर्मात्माओं की श्रद्धा की। इसलिये वाट्सएप और फेसबुक का उपयोग धर्म की निंदा करने में नहीं, अपितु धर्म को जिंदा करने में करें।

'जयदु जिणागम पंथो।'
'जिनागम पंथ जयवंत हो।'

चाहता क्या है?

न जाने आदमी धन को कमाकर चाहता क्या है?
निरन्तर चैन खूब अपना गँवाकर चाहता क्या है?
सभी को एक दिन जलना है मरघट पे अकेले ही।
ये रोशन ज़िंदगी अपनी बुझाकर चाहता क्या है?